



श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्बोधन

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
उदयपुर का चौदवां दीक्षान्त समारोह

दिनांक 24 दिसम्बर, 2020

समय प्रातः 11.30 बजे

राजभवन, जयपुर

माननीय कृषि मंत्री राजस्थान सरकार, श्री लालचंद कटारिया जी, सम्माननीय डॉ. अशोक दलवड़ जी, विश्वविद्यालय के कुलपति, समारोह से जुड़े समस्त कुलपतिगण, प्रबन्ध मण्डल व अकादमिक परिषद् के सदस्यगण, समस्त अधिष्ठाता, निदेशक, संकाय सदस्य, दीक्षान्त समारोह में भाग ले रहे पदक विजेता व उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों, उपस्थित विशिष्टजन, देवियो और सज्जनो।

महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, उदयपुर के चौदहवें दीक्षांत समारोह में आप सभी का मैं अभिनंदन करता हूं।

मुझे प्रसन्नता है कि मेवाड़ की पावन धरा पर राष्ट्र नायक और मातृभूमि के लिए मर मिटने वाले अजर—अमर वीर शिरोमणि महाराणा प्रताप के नाम से संचालित आपके विश्वविद्यालय के वर्चुअल दीक्षांत समारोह आयोजन में आज मैं सम्मिलित हो रहा हूं। मेरे लिए यह गौरव के क्षण हैं। युग पुरुष महाराणा प्रताप और उनकी कर्मभूमि मेवाड़ को मेरा शत—शत नमन।

मुझे यह जानकर सुखद लग रहा है कि महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय भारतीय कृषि

अनुसंधान परिषद द्वारा जारी की गई रैंकिंग सूची में विगत वर्ष के 51वे स्थान से 26वें स्थान पर आ गया है। इसके साथ ही राज्य के छः कृषि एवं पशु चिकित्सा विश्वविद्यालयों में प्रथम स्थान पर यह विश्वविद्यालय स्थापित हुआ है। हम सबके लिए यह गौरव की बात है। इसके लिए मेरी ओर से आप सभी को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं।

इस अवसर पर मैं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति पदक विजेता सुश्री दीपिका कल्याण और योग्यता पदक व उपाधि प्राप्तकर्ताओं को भी हार्दिक बधाई देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है। आज भी देश की बड़ी जनसंख्या खेती और पशुपालन पर ही निर्भर है। इसलिए मैं यह जरूरी मानता हूँ कि कृषि क्षेत्र में विकास के जरिए राज्यों की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ किया जाना चाहिए। इसमें कृषि विश्वविद्यालयों को भी आगे आकर महत्वपूर्ण भूमिका निभानी चाहिए।

ऐसे समय में जब पूरा विश्व कोरोना से ग्रसित है, यह जरूरी है कि सूचना और संचार प्रौद्योगिकी का अधिकाधिक इस्तेमाल करते हुए कृषि विकास से जुड़े

विषयों पर व्यापक विमर्श हों। यह प्रयास किया जाना चाहिए कि पानी की उपलब्धता, जलवायु और मिट्टी की उर्वरा शक्ति के हिसाब से कौनसी ऐसी फसलें खेतों में उपजायी जाएं जिनसे किसानों को अधिक से अधिक लाभ मिल सके।

केन्द्र सरकार ने पिछले कुछ समय के दौरान कृषि और कृषकों के विकास के लिए बेहद महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। उनको किसानों तक पहुंचाने के लिए भी कृषि शिक्षा के तहत कार्य करने की जरूरत है। यह जरूरी है कि कृषि के जरिए अर्थव्यवस्था के विकास के साथ ही किसानों के हित के लिए सभी मिलकर कार्य करें।

आज का यह समय प्रौद्योगिकी का है। मैं यह मानता हूं कि प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल कृषि शिक्षण, अनुसंधान व प्रसार गतिविधियों की दक्षता वृद्धि के लिए अधिक से अधिक होना चाहिए। कृषि के विकास और किसान की समृद्धि ही हमारा सबसे बड़ा लक्ष्य होना चाहिए। मेरा इस संबंध में कृषि विश्वविद्यालयों से यह भी अनुरोध है कि वे अपने ज्ञान के भंडार और कृषक हित में किए गए शोध कार्य को प्रसार शिक्षा के जरिए व्यापक जन समुदाय तक पहुंचाए।

यह जानना मेरे लिए सुखद है कि कोविड-19 संक्रमण काल में आपके विश्वविद्यालय ने मार्च माह से ही तत्काल प्रभाव से ऑनलाईन शिक्षा व्यवस्था प्रारंभ कर दी। सत्र 2019-20 के द्वितीय सेमेस्टर में करीब आधा पाठ्यक्रम शेष था परन्तु प्राध्यापकों ने इसे 9290 ऑनलाइन कक्षाओं के माध्यम से निर्धारित समयावधि में पूर्ण किया है। मैं इसके लिए विश्वविद्यालय की सराहना करता हूँ। कोरोना काल में विद्यार्थियों तक पाठ्यक्रमों की विषय वस्तु पहुंचाने हेतु ई-मेन्युअल व ई-कम्पेंडियम निर्माण की सार्थक पहल के साथ ही कुलपति डॉ. राठौड़ द्वारा तीन संदर्भ पुस्तकों के प्रकाशन से अपने संकाय साथियों को उत्साहित करने का जो कार्य किया गया है, उसके लिए भी मेरी बहुत बधाई।

कोरोना के इस समय ने हमें बहुत से सबक दिए हैं। बड़ा सबक यही है कि समय के साथ शिक्षण व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन किया जाए। नई शिक्षा नीति को इस दृष्टि से मैं बेहद महत्वपूर्ण मानता हूँ कि इसमें दूर दृष्टि रखते हुए विद्यार्थियों के हित में बनाया गया है। नीति में व्यावसायिक उच्च शिक्षा व्यवस्था का लक्ष्य समग्र व

बहु-विषयक शिक्षा के माध्यम से युवाओं में कौशल विकसित करना है।

मेरा यह मानना है कि देश के सभी नागरिकों के लिये सतत आजीविका सुनिश्चित करने हेतु बड़े पैमाने पर उद्यमिता को तीव्र गति से सशक्त करना तथा नवाचार आधारित उद्यमशीलता की संस्कृति को बढ़ावा देना आवश्यक है। इसी से देश में अधिकाधिक रोजगार सृजित हो सकते हैं। मुझे इस बात की प्रसन्नता है कि कृषि शिक्षा में **Student Ready** व अनुभवात्मक ज्ञानार्जन (**Experiential Learning**) जैसे अवयव सम्मिलित हैं। आने वाले समय में यह कदम मील का पत्थर साबित होंगे।

नई शिक्षा नीति अंतर्राष्ट्रीयकरण से जुड़ी है। मुझे प्रसन्नता है कि आपने इस दिशा में एक कदम बढ़ाते हुए हाल ही में आस्ट्रेलिया-इंडिया वाटर सेंटर की स्थापना हेतु अंतर्राष्ट्रीय समझौता किया है। मेरा कुलपति जी, अधिष्ठाताओं तथा सभी संकाय सदस्यों से अनुरोध है कि वे राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के उद्देश्यों की व्यापक सफलता हेतु कार्ययोजना बनाएं।

कृषि क्षेत्र संभावनाओं के साथ ही आशंकाओं से भी सदा भरा रहता है। इसलिए मेरा व्यक्तिगत यह मानना है कि कृषि विश्वविद्यालय कृषि क्षेत्र की वर्तमान, प्रत्याशित और अप्रत्याशित समस्याओं का कारगर ढंग से समाधान करने में भी अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाए।

विश्वविद्यालय कृषि अनुसंधान की ऐसी संस्कृति को प्रोत्साहन दे जिसमें वैज्ञानिक ज्ञान और प्रौद्योगिकी के उपयोग से खेती और इसे करने वाले किसानों का व्यापक स्तर पर भला हो सके। मैं यह मानता हूँ कि एक कृषि विश्वविद्यालय की सफलता शिक्षण के अलावा वहाँ की अनुसंधान व प्रसार की सफलताओं से भी आंकी जाती है। कुलपति जी ने विगत वर्ष दीक्षांत समारोह में डिजिटल टेक्नोलॉजी, राजस्व अर्जन, उद्यमिता विकास, प्रकाशन व पेटेंट जैसे कार्यों हेतु समितियां बनाकर कार्य प्रारम्भ करने का उल्लेख किया था। यह जानना सुखद है कि आपने इस दिशा में न केवल सफलताएँ प्राप्त की हैं अपितु इस दिशा में निरन्तर प्रयास कर रहे हैं।

कृषि में नवीन तकनीकों के साथ प्रौद्योगिकी उपयोग का योगदान जरूरी है। आर्टिफिसिअल इंटेलीजेंस कृषि क्षेत्र में उभरती हुई तकनीक है। एआई आधारित उपकरण

व मशीन आज कृषि प्रणाली को एक अलग स्तर तक ले गये हैं। इस तकनीक से न केवल फसल उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है अपितु वास्तविक समय की निगरानी, कटाई, प्रसंस्करण और विपणन में भी सुधार किया जा सकता है। इसी प्रकार इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) आधारित स्मार्ट कृषि समाधान प्रणाली के माध्यम से प्रकाश, आर्द्रता, तापमान, मृदा नमी, फसल स्वास्थ्य आदि मापने हेतु सेंसर की सहायता से खेतों की निगरानी की जा सकती है। ये प्रसन्नता का विषय है कि आपका इलेक्ट्रॉनिक्स व कम्प्यूटर विभाग IoT आधारित कृषि शोध परियोजनाएं बनाने में क्रियाशील है।

मेरा यह सुझाव भी है कि विश्वविद्यालय इंटरनेट ऑफ थिंग्स आधारित स्मार्ट कृषि समाधान प्रणाली के उपयोग को प्रसार शिक्षा के जरिए हर खेत तक पहुंचाएं। इसके साथ ही सूचना और संचार प्रौद्योगिकी के जरिए स्थान विशेष की जलवायु और वहां उपलब्धता जल के आधार पर ऐसी फसलों के उत्पादन के लिए किसानों को प्रोत्साहित करे जिनसे किसानों खेती-बाड़ी से अधिकाधिक लाभ मिल सके।

कृषि में प्रसार शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका है। मेरा यह मानना है कि प्रसार शिक्षा के अंतर्गत किसानों द्वारा परम्परागत खेती के लिए किए जाने वाले कार्यों, उनकी मौसम और मिट्टी से जुड़ी समझ को भी मौखिक संवाद के जलिए एकत्र कर उसके प्रकाशन किए जाएं। प्रसार तंत्र के अंतर्गत कृषि विज्ञान केन्द्रों की सहायता से नवीन प्रौद्योगिकी का प्रचार-प्रसार प्रभावी ढंग से किया जा सकता है।

आप द्वारा चलायी गयी "स्मार्ट विलेज" योजना प्रशंसनीय हैं। ऐसी योजनाएं दूसरे विश्वविद्यालयों को भी अपने यहां चलानी चाहिए। कृषि विज्ञान केन्द्रों के जरिए उन्नत कृषि प्रशिक्षण कार्यशालाओं, मौसम से जुड़ी जानकारीयों के सतत प्रसार और किसानों द्वारा अपने अनुभव से तैयार तकनीक का अधिकाधिक प्रसार भी आज के समय की मैं बड़ी जरूरत मानता हूँ।

इस अवसर पर मेरा यह भी अनुरोध है कि प्रसार शिक्षा के अंतर्गत आईसीटी व अन्य मीडिया माध्यमों के भरपूर उपयोग से विभिन्न विषयों पर कृषकों को आवश्यक परामर्श सेवाएं प्रदान करने का भी सुनियोजित एक तंत्र विकसित किया जाए। यह जानना सुखद है कि आपने

अपने आठों कृषि विज्ञान केन्द्रों को क्षेत्र विशेष की परिस्थिति अनुसार उत्कृष्टता केन्द्र के रूप में विकसित करने का निश्चय किया है।

यह सही है कि हमारा देश कृषि प्रधान है परन्तु राष्ट्र के सकल घरेलू उत्पाद में इसकी हिस्सेदारी अभी भी सेवा व औद्योगिक क्षेत्रों से कम है। इसके लिए वृहद स्तर पर प्रयास किए जाने चाहिए। हमें अपने अन्नदाताओं पर गर्व है क्योंकि कोरोना महामारी प्रभावित काल में भी इन्होंने अपनी कृषि गतिविधियों को जारी रख कर देशवासियों को खाद्य सुरक्षा को संदेश दिया। मैं इस अवसर पर देश के किसानों को नमन करते हुए उनके योगदान की तहेदिल से सराहना करता हूँ।

आज भारत का वार्षिक खाद्यान्न उत्पादन 29.5 करोड़ टन के रिकार्ड स्तर तक पहुंच चुका है जिसमें 11.8 करोड़ टन चावल, 10.7 करोड़ टन गेहूँ व 2.3 करोड़ टन दालें सम्मिलित हैं। इसी प्रकार 3.35 करोड़ टन तिलहन उत्पादन भी हमारी सफलताओं को दर्शाता है। देश का बागवानी उत्पादन भी आज 32.85 करोड़ टन के स्तर पर पहुंच चुका है। राष्ट्र आज 18.8 करोड़ टन दुग्ध उत्पादन के साथ विश्व स्तर पर प्रथम स्थान पर है जिसमें 12.6

प्रतिशत की हिस्सेदारी के साथ हमारा प्रदेश दूसरा प्रमुख अंशदाता है। साथ ही राष्ट्र मत्स्य व कुक्कुट उत्पादन में भी प्रगति के पथ पर अग्रसर है। ये सभी आंकड़े हमें कृषक समाज के विकास की ओर इंगित करते हैं। इस प्रगति में कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा किये जा रहे अनुसंधान व प्रसार कार्यक्रमों का भी अनुपम योगदान है। परन्तु ये हमारे लिये आत्म सन्तोष का विषय कदापि नहीं हो सकता है।

हमारे सामने आज दो महत्वपूर्ण विषय समग्र समाधान के लिये खड़े हैं। प्रथम — उत्पादन व दूसरा — संसाधन संरक्षण। हमें ऐसी कृषि तकनीकें व प्रणालियां विकसित करनी होंगी जो हमारी खाद्य व पोषण सुरक्षा को सुरक्षित रखते हुए हमारे संसाधनों और पर्यावरण को संरक्षित रख सकें। उत्तम कृषि क्रियाओं (Good Agricultural Practices) के माध्यम से हम फसल चयन से लेकर भण्डारण तक की क्रियाओं को संचालन इस प्रकार कर सकते हैं जो ऋग्वेद में वर्णित जुताई, बुवाई, सिंचाई जैसी कृषि क्रियाओं का पर्याय साबित हो।

मेरे संज्ञान में लाया गया है कि एमपीयूएटी ने इस दिशा में कार्य प्रारम्भ कर दिया है। मैं कृषि में जल के

उपयोग पर आप सभी का ध्यान विशेष रूप से आकृष्ट करना चाहता हूँ। भारतवर्ष में विश्व की 18 प्रतिशत जनसंख्या रहती है परन्तु हमें विश्व के कुल 4 प्रतिशत ताजे पानी का संसाधन ही उपलब्ध है जिसका लगभग 80 प्रतिशत उपयोग कृषि क्षेत्र में होता है। ऐसे में जल की प्रत्येक बूंद हमारे लिये बहुमूल्य है। “**More crop per drop**” एक आदर्श वाक्य है जिसके परिप्रेक्ष्य में हमें अपने कृषि जल प्रबंधन को संवारना होगा। इसी प्रकार हमें फसलों में पोषक तत्व प्रबंधन को भी इस प्रकार ढालना होगा कि हमें रासायनिक उर्वरकों और साथ ही कीट व व्याधि नाशियों पर निर्भरता कम कर जैविक कृषि को ओर अग्रसर हो।

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि जैविक खेती पर एक नेटवर्क परियोजना श्रेष्ठता से कार्य कर रही है और उसे विगत वर्ष राष्ट्रीय स्तर का पुरस्कार भी मिला था। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आपका विश्वविद्यालय इस परियोजना में किये गये शोध के आधार पर अपने कार्यक्षेत्र के कृषकों को रसायनों के उपयोग में एक निश्चित अवधि में न्यून स्तर पर लाने में सहायक होगा जिससे **Good**

Agricultural Practices की अवधारणा अनुसार हम पर्यावरण सुरक्षा के साथ-साथ समाज को सुरक्षित व अच्छी गुणवत्ता वाला भोजन उपलब्ध करवा सकेंगे।

कृषि में नवाचारों की श्रृंखला में "समन्वित कृषि प्रणाली" का विशेष महत्व है। भारतवर्ष के 86 प्रतिशत खेती छोटी व मध्यम जोत के कृषकों का प्रमुख व्यवसाय है। समन्वित कृषि प्रणाली ऐसे कृषकों के लिये आय, रोजगार, आजीविका और पोषण सुनिश्चित करने हेतु एक महत्वपूर्ण साधन है। साथ ही उचित प्रणाली को अपना कर कार्बन फुट प्रिंट भी कम किये जा सकते हैं। अनुसंधान द्वारा राज्य के विभिन्न सस्य जलवायु खण्डों हेतु आदर्श "समन्वित कृषि प्रणाली" मॉडल निर्मित कर सत्यापित किये जाने चाहिए जिससे हम लघु व सीमांत कृषकों के आर्थिक उन्नयन का उद्देश्य प्राप्त कर सकें।

भारतवर्ष में कुल कृषि उत्पाद का छोटा अंश ही मूल्य वर्धित है जिसमें उच्चतम स्तर (35 प्रतिशत) दूध व न्यूनतम (2.2 प्रतिशत) फल व सब्जियों का है। कच्चे माल की प्रसंस्करण योग्य किस्मों की अनुपलब्धता, कृषि उत्पादन की मौसमी प्रकृति व पर्याप्त कटाई उपरांत प्रबंधन हेतु बुनियादी ढांचे जैसे कोल्ड चैन, परिवहन व

भण्डारण ढांचों की अनुपलब्धता प्रमुख कमियां हैं जिन के निवारण की जिम्मेदारी हम सभी की है। हमारे संयुक्त प्रयासों से ही विशेषकर बागवानी, पुष्पोत्पादन व औषधीय फसलों जैसे क्षेत्रों में कृषकों की आय बढ़ाने में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। इसके अतिरिक्त अनाज फसलों, दालों, तिलहन, कपास व अन्य वस्तुओं का भी प्रसंस्करण कर आय बढ़ाई जा सकती है। कृषि विश्वविद्यालय इस दिशा में खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्रालय की कई योजनाओं का लाभ ले सकते हैं। इस हेतु आपके डेयरी व खाद्य प्रौद्योगिकी महाविद्यालय तथा प्रसंस्करण, उद्यानिकी तथा खाद्य आहारिकी विभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसी प्रकार ऊर्जा के वर्तमान परिदृश्य में जब सौर ऊर्जा को प्राथमिकता प्राप्त है, आपका नवीकरणीय ऊर्जा अभियांत्रिकी तंत्र शोध और प्रसार के माध्यम से अग्रणी भूमिका निभा सकता है। इसे और अधिक प्रभावी और जनोपयोगी करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

कृषकों की आय दुगुनी करने का सरकार का संकल्प पूर्ण करने का प्रण केवल उत्पादन व उत्पादकता बढ़ा कर

प्राप्त नहीं किया जा सकता है। इस दिशा में कृषि उत्पादों के विपणन की समूची व्यवस्था एक महत्वपूर्ण कड़ी है। फसल बुवाई के समय किसानों को प्राप्त होने वाली कीमत की अग्रिम जानकारी नहीं होती है। आमतौर पर वे कटाई के समय प्रचलित कीमतों पर अपनी फसल बेचते हैं। ऐसे परिप्रेक्ष्य में आप उन्हें आर्थिक निर्णय लेने में सहायता प्रदान कर सकते हैं। इसी प्रकार कृषि विज्ञान केन्द्र कृषकों को ई-नाम पर पंजीकृत करवा कर उन्हें राष्ट्रीय कृषि बाजार से जोड़ने की पहल करनी चाहिये। ई-नाम (e-NAM) भारत में कृषि वस्तुओं के लिए एक ऑनलाइन विपणन मंच है जो लाभार्थियों को बेहतर कीमत खोजने में सहायता प्रदान करता है। इस पोर्टल के माध्यम से उन्हें बिना किसी समय ह्रास के ऑनलाइन भुगतान भी मिल जाता है।

यहाँ पर मैं कृषकों को आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करने हेतु **FPO** यानि “किसान उत्पादकता संगठनों” की चर्चा भी करना चाहूंगा। क्योंकि हमारे 86 प्रतिशत कृषक लघु सीमांत श्रेणी में आते हैं अतः वे स्वयं अपना उत्पादन बेचने में अक्षम हैं। ऐसे में 300 या इससे अधिक किसान मिल कर उत्पादक संगठन बना सकते हैं जो सदस्य कृषकों

की व्यावसायिक गतिविधियों को सशक्त करेगा। मेरा आप से अनुरोध है कि लघु कृषि व्यापार संघ, नाबार्ड व राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम के सहयोग से अपने कार्यक्षेत्र में **FPO** गठित कर लघु-सीमांत कृषकों के आर्थिक सशक्तिकरण में अपनी महती भूमिका निभाएं।

जलवायु परिवर्तन अन्य क्षेत्रों की भांति कृषि क्षेत्र के समक्ष भी प्रचण्ड चुनौतियां उत्पन्न कर रहा है। वैश्विक उपायों के बावजूद भी जलवायु परिवर्तन को अल्पावधि या कुछ दशकों में पूर्व स्थिति में लाना संभव नहीं है। कृषि क्षेत्र में हमें कृषि व सम्बद्ध क्षेत्र में निपुणता हासिल करने हेतु अनुकूलता उपायों को व्यवहार में लाने की आवश्यकता है। ऐसे में जलवायु स्मार्ट कृषि को अपनाया जाना समय की आवश्यकता है।

कृषि उत्पादन प्रणालियों की दक्षता और संसाधन उपयोग दक्षता बढ़ाने के लिए किसानों को सशक्त किए जाने के लिए भी प्रयास किए जाने चाहिए। आज कृषि कार्यो हेतु मानव श्रम की कमी दृष्टिगोचर हो रही है। ऐसे में यंत्रिकरण की ओर त्वरित गति से अग्रसर होना होगा। यंत्रिकरण मानव श्रम का विकल्प नहीं अपितु अनुपूरक है। कृषि यंत्र कार्यो में समयवद्धता, सूक्ष्मता तथा महंगे आदानों

की उपयोग दक्षता बढ़ा कर उत्पादन वृद्धि में सहायक सिद्ध हो सकते हैं। प्रसन्नता है कि आपका विश्वविद्यालय कृषि आभियांत्रिकी विभाग से सुसज्जित है जो इस दिशा में कार्य कर रहा है। मुझे प्रसन्नता है कि छोटी जोत के कृषकों को कृषि यंत्रों की उपलब्धता हेतु मेरे द्वारा विगत दीक्षांत समारोह में दिये गये सुझाव अनुसार आपने चयनित कृषि विज्ञान केन्द्रों पर कस्टम हायरिंग केन्द्रों की स्थापना की है। इस दिशा में आगे और कार्य करने की आवश्यकता है।

हमें गर्व है कि आज भारतवर्ष खाद्यान्न उत्पादन में न केवल आत्मनिर्भर है अपितु वह आने वाली किसी भी आपदा से निपटने व अपनी सम्पूर्ण जनसंख्या की पोषण सुरक्षा हेतु सक्षम भी है। परन्तु हमें इससे संतुष्ट नहीं होना है। हमें नवाचारों से अपनी उत्पादकता बढ़ा कर संवहनीयता हासिल करनी होगी। साथ ही अपने पर्यावरण को भी संरक्षित करना होगा ताकि आने वाली पीढ़ी भी इस धरा के सुफलों को उपभोग कर सके। बदलते परिवेश में शिक्षा, शोध व प्रसार **Innovate-Inspire-Illuminate** (नवाचार, प्रेरणा तथा प्रदीपन) के सिद्धांत पर आधारित हो जिससे हम सम्पूर्ण समाज का पथ

प्रदर्शन कर सकें। इस हेतु हमें कठोर श्रम और साधना करनी होगी।

भारतीय संस्कृति कृषि से ओतप्रोत रही है। यजुर्वेद में मानसून का वर्णन, शतपथ ब्राह्मण में कृषि की क्रियाओं—जुताई, कटाई, मड़ाई, का उल्लेख बहुत सुंदर ढंग से किया गया है। बाद में वृहत्संहिता, मेघदूत आदि ग्रंथों में महर्षि पाराशर, वराहमिहिर, कश्यप, गर्ग और कालिदास आदि विद्वानों से लेकर भक्तिकालीन साहित्य और रीतिकालीन साहित्य में घाघ और भड्डरी जैसे कवियों ने समय—समय पर कृषि संबंधी अनुभवों और वर्षा एवं मौसम पूर्वानुमान पर जो लिखा है, उस पर जाएंगे तो लगेगा कि कृषि भारतीय संस्कृति रही है।

दीक्षांत समारोह के इस अवसर पर मेरा आप सभी से यह भी अनुरोध है कि कृषि संस्कृति की भारतीय परम्परा पर भी विश्वविद्यालय कार्य करे। यह सही है कि कृषि शिक्षा से कृषि का विकास हुआ है परन्तु किसानों के पास अपने अनुभव और परम्परागत ज्ञान ऐसा है, जो आधुनिक कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। उस ज्ञान को सहेजने के साथ ही खेत पर काम करने वाले किसानों से विद्यार्थियों के संवाद की परम्परा विकसित की

जाए। इससे किसानों के गूढ़ अनुभव हमें कृषि शिक्षा के भविष्य के विकास के रूप में प्राप्त हो सकते हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने हमारे खेत-खलिहानों में कार्य करने वाले श्रमजीवी किसानों के सुख-दुख भरे जीवन की अपने काव्य में सुमधुर व्यंजना की है। इस अवसर पर उनकी कविता की यह पंक्तियां मुझे स्मरण हो रही हैं—

हरी-भरी खेतों की सरस्वती लहराई

मग्न किसानों के घर उन्मद बजी बधाई

किसान इस धरती के अन्नदाता हैं। उनके श्रम के सम्मान से ही समाज का सही मायने में विकास हो सकता है। आज इस दीक्षांत समारोह में मैं धरती पर हरियाली फैलाने वाले, अन्न उगाने वाले किसानों को नमन करते हुए उनके विकास के लिए विश्वविद्यालय स्तर पर अधिकाधिक कार्य करने की आह्वान करता हूँ।

आज के इस दीक्षांत समारोह में आईए हम सभी कृषि शिक्षा की बेहतरी के साथ कृषि क्षेत्र में नवीनतम शोध एवं अनुसंधान की ऐसी संस्कृति विकसित करने का संकल्प लें जिससे देश के किसानों का ही नहीं भला हो बल्कि भारत कृषि क्षेत्र में विश्व का अग्रणी राष्ट्र बने। आइये हम प्रण

करें कि अपनी सामर्थ्य अनुसार राष्ट्र के उन्नयन में हम सभी अपनी भागीदारी निभायेंगे।

मैं एक बार पुनः सभी उपाधिधारकों एवं पदक विजेताओं को बधाई देते हुए उन्हें नवजीवन की शुभकामनाएँ देता हूँ तथा नववर्ष 2021 की शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

धन्यवाद। जय हिन्द।